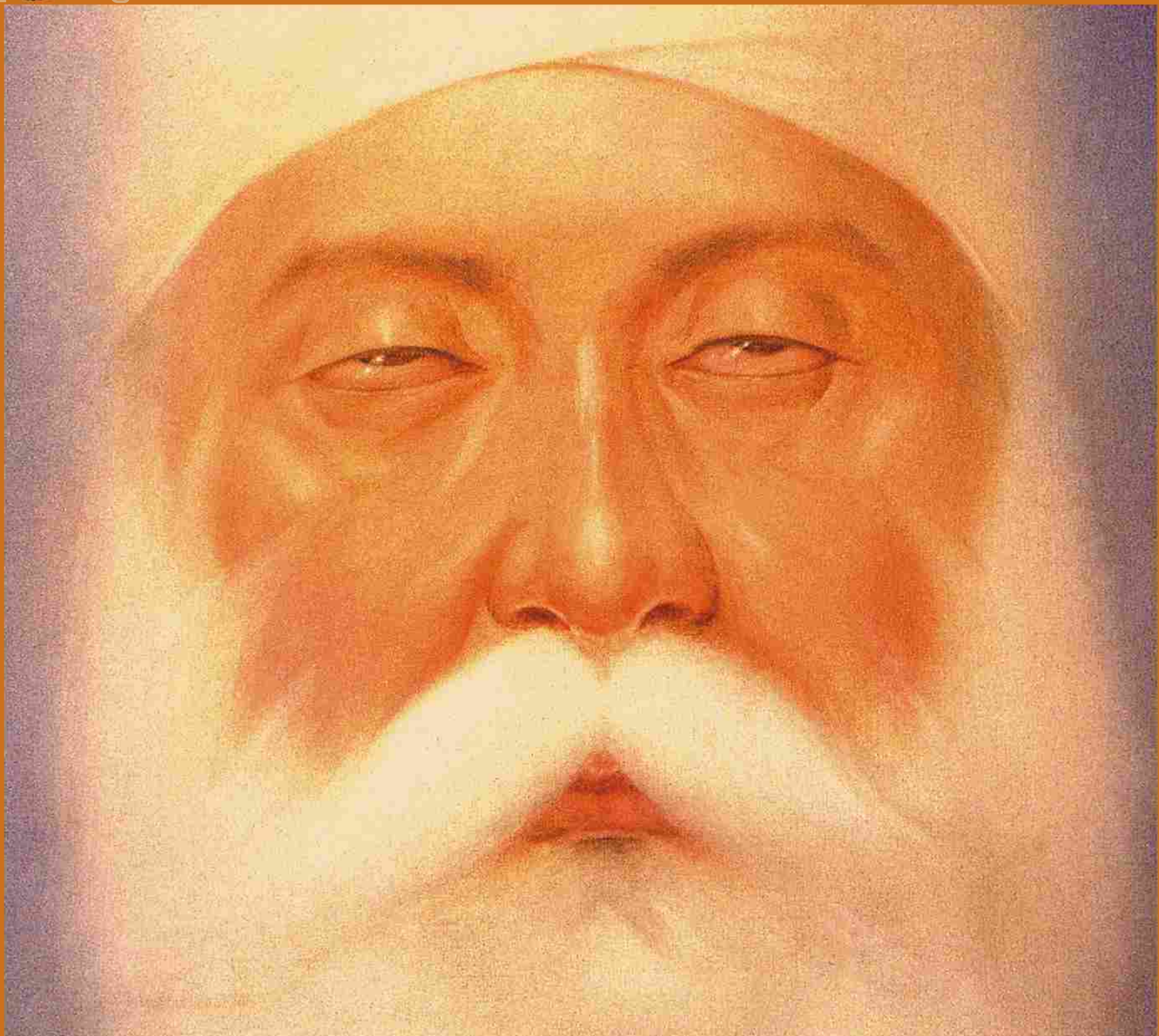

# नाद, संगीत और ध्यान

नानक कहते हैं, 'ज्ञान के खंड में होश की प्रचंडता है।'

तुम अभी अज्ञान के खंड में हो। वहां बेहोशी की प्रचंडता है। वहां नींद असली तत्व है। वहां नाद है। जो पहली घटना घटती है ज्ञानी को, वह नाद है। जिसको ओंकार कहा उन्होंने। जिसको नानक कहते हैं, एक ओंकार सतनाम। वह नाद का नाम है। यह ओंकार तो सिर्फ प्रतीक है उसको बताने के लिए। क्योंकि अस्तित्व एक गहन संगीत से निर्मित है। अस्तित्व संगीत है। और बड़ा गहन संगीत है। अनाहत संगीत है। कोई उसे पैदा नहीं कर रहा है। किसी चीज से पैदा नहीं हो रहा है। उसका कोई कारण नहीं है। अस्तित्व के होने का ढंग संगीत है। इसलिए तो संगीत में तुम लीन हो जाते हो। और अगर संगीत में तुम लीन होते हो,

तो उसका केवल इतना ही अर्थ होता है कि उस संगीत में कहीं नाद की थोड़ी सी ध्वनि, कहीं नाद की थोड़ी परछाई है।

महान संगीतज्ञ का एक ही अर्थ है कि वह उस नाद को वाद्य में पकड़ ले। उस ओंकार को थोड़ा सा तुम्हारे लिए, तुम्हारी नींद की दुनिया में उतार लाए। संगीत का अर्थ तुम्हारी वासनाओं को उत्तेजित करना नहीं है।

दुनिया में दो तरह के संगीत हैं। एक पूर्वीय संगीत है, जिसकी गहरी से गहरी खोज हिंदुओं ने की है। उन्होंने नाद पर उसको आधारित किया। जब संगीत नाद की तरफ ले जाता है, तो संगीत को सुनते-सुनते ध्यान निर्मित होने लगता है।

और फर्क समझ लेना। ध्यान का अर्थ है, तुम ज्यादा जागने लगोगे। तुम परिपूर्ण होश से भर जाओगे। जैसे एक दीया अचानक भीतर जल जाए। तुमने सुना है कि संगीतज्ञ अपने संगीत से बुझे दीए जला सकता है। तुम बाहर के दीयों का खयाल मत करना। बाहर के दीयों से इसका कुछ लेना-देना नहीं है। तुम बुझे हुए दीए हो। और अगर संगीतज्ञ खुद भी समाधिस्थ है तो ही! क्योंकि वह समाधिस्थ हो, तो ही ओंकार की ध्वनि को संगीत में पिरो पाएगा और तुम्हारे जगत में ला पाएगा। थोड़ी सी भी झलक ले आए, एक बूंद ले आए उस अमृत की तो तुम पाओगे कि तुम जाग गए हो, तुम होश से भरे हो, तुम्हारी नींद से किसी ने तुम्हें झकझोर दिया है। और यह संगीत ध्यान बन जाएगा।

फिर एक दूसरा संगीत है ठीक इसके विपरीत, जो सुलाता है। जो तुम्हें और तंद्रा में ले जाता है। उस संगीत को सुनकर तुम्हारी वासना जगेगी। इस्लाम ने उसी संगीत के कारण संगीत को वर्जित कर दिया। क्योंकि इस्लाम को पता ही न था कि हिंदुओं ने एक और संगीत खोज लिया है, जो सहस्रार से संबंधित है।

दो संगीत हैं। एक तो कामवासना से, सेक्स सेंटर से संबंधित है। और एक संगीत है, जो सहस्रार से संबंधित है। सहस्रार से संबंधित संगीत तो नाद है। सेक्स सेंटर से, कामवासना से संबंधित संगीत तो केवल वासना को फुसलाना है। इस्लाम को वही पता था। जहां इस्लाम पैदा हुआ, वहां एक ही संगीत का बोध था, कि संगीत लोगों को वासना में ले जाता है, कामवासना में ले जाता है, राग-रंग में ले जाता है। इसलिए इस्लाम ने तो बिलकुल इनकार ही कर दिया, कि संगीत की जगह ही नहीं है। मस्जिद के सामने बैंड-बाजा तक मत बजाना।

और यह भी ठीक है। क्योंकि दुनिया में चल रहा निन्यानबे प्रतिशत संगीत तो ऐसा ही है, जो तुम्हें मंदिर में नहीं ले जा सकता। मंदिर से दूर ले जाएगा। पश्चिम में संगीत की हजारों नयी धाराएं हैं। वे सब की सब विकृत हैं। उस संगीत में तुम अपना होश खो दोगे। वह शराब जैसा है। उससे तुम जागोगे नहीं, तुम उससे और वासना में लीन हो जाओगे। वेश्या उस संगीत का उपयोग करती है। संतों ने

पश्चिम में संगीत की हजारों नयी धाराएं हैं। वे सब की सब विकृत हैं। उस संगीत में तुम अपना होश खो दोगे। वह शराब जैसा है। उससे तुम जागोगे नहीं, तुम उससे और वासना में लीन हो जाओगे। वेश्या उस संगीत का उपयोग करती है

भी उस संगीत का उपयोग किया है। संगीत वही है। लेकिन वही व्यक्ति उसको नाद बना सकता है, जिसको नाद का अनुभव हुआ हो।

नानक तो संगीतज्ञ हैं। वे तो बोलते नहीं, गाते हैं। वे तो उत्तर भी देते हैं, तो गीत गा कर देते हैं। और ये गीत कोई बनाए हुए गीत नहीं हैं। ये सहज हैं। किसी ने कुछ पूछा और नानक मरदाना को इशारा करेंगे, और वह बजाने लगता है। और नानक गीत गाने लगते हैं। गा कर ही उन्होंने कहा है। क्योंकि पूरा अस्तित्व गीत की भाषा को समझता है। और जब कोई व्यक्ति खुद समाधिस्थ हो, तो उसके संगीत में नाद उतर आता है।

नाद का अर्थ है, वह परम ध्वनि, जो अस्तित्व में चुपचाप पैदा हो रही है। जैसे कभी रात के सन्नाटे में तुम्हें सुनायी पड़ती है सन्नाटे की आवाज। ठीक वैसा ही चौबीस घंटे एक नाद चल रहा है। एक रिदम अस्तित्व का है। जब कुछ भी नहीं हो रहा है, तब भी वह चल रहा है। पर उसके लिए तुम्हें बड़ा शांत हो जाना पड़े, तब तुम समझ पाओगे। तुम्हारी भीतर की सब आवाज बंद हो जाए, तब तुम समझ पाओगे। अभी तो तुम हजार तरह के बाजार से भरे हो। अभी तुम्हारे भीतर बड़ा शोरगुल है। इसी शोरगुल में तुम्हें जो पसंद पड़ता है संगीत, वह भी शोरगुल को बढ़ाने वाला ही हो, तो ही पसंद पड़ता है। वह भी अराजक हो, उपद्रव हो, तुम्हारी विक्षिप्तता को प्रकट करता हो, तो ही पता चलता है।

मुल्ला नसरुद्दीन के पड़ोस में एक आदमी आलाप भर रहा था। आधी रात को नसरुद्दीन उसके पास गया और उसने कहा कि आप को तो अपने संगीत का कार्यक्रम लंदन, मास्को, पेकिंग, वहां देना चाहिए। उस आदमी ने कहा कि नसरुद्दीन, मैंने कभी सोचा भी नहीं कि तुम संगीत के इतने प्रेमी हो। क्या तुम्हें मेरा संगीत इतना पसंद आया है? उसने कहा कि नहीं, कम से कम वहां से तुम्हारी आवाज हमें सुनायी न पड़ेगी।

तुम्हारी चारों तरफ जो चल रहा है संगीत के नाम से, वह विसंगीत है। उसकी आवाज तुम्हें सुनायी ही न पड़े तो अच्छा है। तुम वैसे ही विसंगीत से भरे हो। काफी वैसे ही जहर तुममें भरा है। और उस जहर को उठाने की सब चेष्टाएं चल रही हैं। नाच रहे हैं लोग, तो वासना को जगाने के लिए। गा रहे हैं लोग, तो वासना को जगाने के लिए।

पर जिस चीज से भी वासना जग सकती है, उसी चीज से वासना सो भी सकती है। इसको याद रखना। जो चीज जहर है, वही अमृत हो सकती है, इसको याद रखना। उपयोग पर निर्भर है। उपयोग पर ही परिणाम निर्भर है। जहर औषधि बन जाती है। और जहर मृत्यु भी बन जाती है। जहर मौत से बचाता है, मौत में ले भी जा सकता है।

नानक कहते हैं, जो पहला अनुभव होता है ज्ञान-खंड में वह नाद है। दूसरा अनुभव विनोद है। यह बड़ी समझ लेने की बात है। क्योंकि तुम सोच ही नहीं सकते कि संत और विनोद का क्या संबंध? विनोद का मतलब है कि जिंदगी गंभीर नहीं रह जाती है। एक हंसी-खुशी हो जाती है। विनोद का अर्थ है, जिंदगी एक हल्का आनंद हो जाती है। निर्भार, जिसमें कोई वजन नहीं। तुम साधु-संतों को देखते हो, जो गंभीर हैं, बड़े चेहरे वाले हैं। जिनके चेहरे पर ऐसा लगता है कि जैसे दुनिया भर की मुसीबत इन्हीं के ऊपर आ पड़ी है।

नानक कहते हैं, जिसने नाद सुन लिया, वह कैसे उदास होगा? उसके जीवन में उदासी नहीं होगी, विनोद होगा। वह हंसेगा। वह हंस सकेगा। वही हंस सकता है। तुम तो हंसोगे कैसे? तुम्हारी तो हंसी भी झूठी है। तुम्हारे प्राणों में प्रफुल्लता नहीं है। तुम्हारे होठों पर हंसी कैसे होगी? जिसने जाना, वह हंस सकता है। वह ही हंस सकता है।

और नानक कहते हैं, जिसने नाद को पहचान लिया उसके जीवन का ढंग विनोद का होगा। उसके जीवन में तुम गंभीरता न पाओगे। प्रामाणिकता पाओगे, गंभीरता न पाओगे। उसके जीवन में तुम हंसी-खुशी पाओगे, उदासी न पाओगे। उसकी आंखों में कालिमा न होगी। उसकी आंखों में एक उत्सव होगा।

*– ओशो*
*एक ओंकार सतनाम, अट्ठारहवां प्रवचन*
*(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)*

नानक तो संगीतज्ञ हैं। वे तो बोलते नहीं, गाते हैं। वे तो उत्तर भी देते हैं, तो गीत गा कर देते हैं। और ये गीत कोई बनाए हुए गीत नहीं हैं। ये सहज हैं। किसी ने कुछ पूछा और नानक मरदाना को इशारा करेंगे, और वह बजाने लगता है। और नानक गीत गाने लगते हैं